International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to Higher Education For all Subject

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

AUG , 2022

Vol-1, ISSUE-08

IMPACT FACTOR- 6.115 (SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

94 139 70 222

E-Mail:
www.ugcjournal@gmail.com

professor.kbsingh@gmail.com

मुख्य सम्पादक – डॉ. कृष्णबीर सिंह का मानद पद कार्य पूर्णतः अवैतनिक है।
इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये।
शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी।उक्त जर्नल में प्रकाशन हेतु भेजे गए पेपर सामग्री का सम्पूर्ण नैतिक दायित्व पेपर लेखक का होगा। मुख्य संपादक ,प्रकाशक ,मुद्रक , पिअर रिविव्यु मंडल जिम्मेदार नहीं होगा। लेखकों से अनुरोध है किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी न करें।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance. **The selection and publication is done after recommendation of Peer Reviewed Team, Refereed and subject expert Team.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. **The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.**
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
   In case of plagiarism, the entire moral responsibility of the paper material will rest with the author only.
6. **The entire moral responsibility of the paper material sent for publication in the said journal will be that of the paper author. Chief Editor, Publisher, Printer, Peer Review and Refereed Board will not be responsible.**

Authors are requested not to do any kind of plagiarism

7. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.

EDITORIAL BOARD

Patron

Prof. Kala Nath Shastri

(Rashtrapati Puraskar" For His Contribution To Sanskrit)

Prof. Dr. Alireza Heidari

Full Professor And Academic Tenure, USA

Chief Editor

Dr. Krishan Bir Singh

International Advisory Board

Aaeid M. S. Ayoub

Geotechnical Environmental Engineering

Uqbah bin Muhammad Iqbal

Postgraduate Researcher

Badreldin Mohamed Ahmed Abdulrahman

Associate Professor

Dr. Alexander N. LUKIN

Principal Research Scientist & Executive Director

Dr. U. C. Shukla

Chief Librarian and Assistant Professor

Dr. Abd El-Aleem Saad Soliman Desoky

Professor Assistant

Prof. Ubaldo Comite

Lecturer

Moustafa Mohamed Sabry Bakry

Dr Sajid Mahmood

Shameemul Haque

Associate Chief Editor

Ravindrajeet Kaur Arora

S. Bal Murgan

Dr. Sandeep Nadkarni

Dr. A Karnan

Dr. S.R. Boselin Prabhu

Deepika Vodnala

Dr. Kshitij Shinghal

Christo Ananth

Gopinath Palai

Dr. Neeta Gupta

Dr. Vinita Shukla

Harold Jan R. Terano

Dr Sajid Mahmood

Dr Pavan Mishra

Editor

Dr.H.B.Rathod

Dr. Dharamender Singh Chauhan,UOR,Jaipur

Dr.Govind Nath Chaudhary-Sanskrit- Bhagalpur

Dr.Naveen Gautam

Dr. Mohini Mehrotra

Dr. Arvind Vikram Singh

Dr. Suresh Singh Rathore

Dr.Kishori Bhagat

Dr.Murari Lal Dayma

Kamalnayan. B. Parmar

Dr.Deepak Sharma

Dr.Sanjay B Gore

Dr. A.karnan

Dr.Amita Verma

Dr . Ity Patni

Dr. Somya Choubey

Dr.Surinder Singh

Dr. Manoj S. Shekhawat,

Dr. Anshul Sharma

Dr. Ramesh Kumar Tandan

S N Joshi

Dr. Sant Ram Vaish

Bindu Chauhan

Dr. Vinod Sen

Dr. Sushila Kumari

Dr Indrani Singh Rai

Dr Abhishek Tiwari

Prof.S.K.Meena

Prof.Praveen Goswami

G Raghavendra Prasad

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Dr. Dnyaneshwar Jadhav
Akshey Bhargava
Dr. A. Dinesh Kumar
Dr. Pintu Kumar Maji
Dr Hanan Elzeblawy Hassan
Sandeep Kumar Kar
Dr.R.devi Priya
Dr.P.Thirunavukarasu
Dr. Srijit Biswas
Parul Agarwal
Dr. Preeti Patel
Archana More
Dr. Harish N
Dr. Seema Singh
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Pankaj Gupta
Dr Arvind Sharma
Dr. Ramesh Chandra Pathak
Dr. Ankush Gautam
Dr Markandey Dixit
Dr. Manoj Kumar
Ratko Pavlovi, Phd
Dr.S.Mohan
Dr Ramachandra C G
Dr.Sivakumar Somasundaram
Dr. Sanjeev Kumar
Dr. Padma S Rao
Dr Munish Singh Rana
Dr. Piyush Mani Maurya

Associate Editor

Dr. Yudhvir Redhu
Dr.Kiran B.R
Dr Richard Remedios
Dr. R Arul
Anand Nayyar
Dr . Ekhlaque Ahmad
Dr. Snehangsu Sinha
Dr Niraj Kumar Singh
Sandeep Kataria
Dr Abhishek Shukla
Somesh Kumar Dewangan
Amarendra Kumar Srivastav
Dr K Jayalakshmi
Dilip Kumar Jha

Assistant Editor

Jasvir Singh
Dr.pintu Kumar Maji
Dr. Soumya Mukherjee
Prof Ajay Gadicha
Ashutosh Tiwari
Gyanendra Pratap Singh
Jitendra Singh Goyal
Ashish Jaiswal
Hiten Barman
Dr. Priti Bala Sharma

Subject Expert

Dr. Jitendra Arolia
Dr. Suresh Singh Rathore
Dr.kishori Bhagat
Dr Mrs Vini Sharma
Ranjan Sarkar
Chiranji Lal Parihar
Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr Amit Kumar
Santosh Kumar Jha
Dr . Ekhlaque Ahmad
Naveen Kumar Kakumanu
Dr. Chitra Tanwar
Jyotir Moy Chatterjee
Somesh Kumar Dewangan
Raffi Mohammed
Dr. Sunita Arya
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Janak Singh Meena
Dr. Neha Kalyani

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Dr. Rajeev Nayan Singh
Dr. Pankaj Rathore
Dr. Mahendra Parihar
Pradip Kumar Mukhopadhyay
Dr Vijay Gaikwad

Research Paper Reviewer

Dr. B H Kirdak
Amit Tiwari
Dr Dheeraj Negi
Dr. Meeta Shukla
Dr. Ranjana Rawat
Sonia Rathi
Dr.Anand Kumar
Dr.Pardeep Sharma
Anil Kumar
Dr. Deepa Dattatray Kuchekar
Dr Ade Santosh Ramchandra

Guest Editor

Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr. Falguni S. Vansia

Chief Advisory Board

Ashok Kumar Nagarajan

Advisory Board

Dr. Naveen Kumar
Manoj Singh Shekhawat
Pranit Maruti Patil
Vishnu Narayan Mishra

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

International Level Double Blind Peer Reviewed, Refereed, Indexed Research Journal, ISSN(Print)-0974-2832, E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009/29954, Impact Factor-6.115(SJIF), AUG-2022,Vol-I, Issue-08

Research Paper -Education

धर्मवीर भारती का शैक्षिक चिन्तन : एक अध्ययन

* डॉ. विष्णु कुमार ** रेखा शर्मा

*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

**शोधार्थी, शिक्षा विभाग,जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

प्रस्तावना :

शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं यथा स्मृति, चिन्तन, अभिप्रेरणा, प्रत्यक्षीकरण का परिणाम है। हमारे जीवन की प्रत्येक घटना व क्रिया मनोविज्ञान से प्रभावित है। सभी प्रकार की मानवीय क्रियाएं इसकी विषयवस्तु है। इसमें विभिन्न उपक्रियाओं का समन्वय होता है।

विशुद्ध मनोविज्ञान का उद्देश्य ज्ञान के भण्डार में वृद्धि करना है। इसके साथ ही इसका कार्य मानव मन के बौद्धिक प्रश्नों को हल करना मानव के व्यवहार अर्जन में सहायता करना व संशोधन करना है। व्यवहार अर्जन व संशोधन सदैव समाज की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं के अनुरूप किया जाता है। शिक्षा व्यक्तियों में वांछित आदतों, अभिवृत्तियों व कौशलों का निर्माण करने में सहायक है ताकि व्यक्ति समाज में स्वस्थ समायोजन स्थापित कर सके।

अतः शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मूलभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं, प्रत्यक्षीकरण, प्रक्रियाओं, संज्ञात्मक प्रक्रियाओं, विकासात्मक व्यक्तिगत विभिन्नताओं, विकासात्मक सामाजिक प्रक्रियाओं की न केवल जानकारी आवश्यक है, अपितु इन प्रक्रियाओं का अनुप्रयोग करना भी आवश्यक है। धर्मवीर भारती का सम्पूर्ण काव्य उनके आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारती जी मूलतः व्यक्ति स्वातंत्र्य, मानवीय संकट, रोमानी चेतना के रचनाकार थे। भारती मूलरूप से निम्न मध्यम वर्ग की हताशा, आर्थिक संघर्ष, नैतिक विचलन और अनाचार को चित्रित किया है। धर्मवीर भारती ने अपने अनुभूतियों की कचोट से ही कलम चलाई है। जीवन को संवारते ही उनकी कविता विविध रूप लेकर संवरती है। एक सफल साहित्यकार काल की गति और कला को ठुकराता हुआ, ऐसे साहित्य का निर्माण करता है जिसके बीज में मानव जीवन के कल्याण के लिये संस्कार भरे होते हैं।

छायावाद के उत्कर्ष काल में नए कवियों की पीढ़ी ने छायावादी गूढ गंभीर रहस्यमयी भाषा का परित्याग कर सहज सरल भाषा में अपने भाव विचार अभिव्यक्त किए और कविता को साधारण जनता के लिये बोधगम्य बनाया। शिक्षा सभ्य मानव के जीवन की डोर है। शिक्षा शक्ति है, शिक्षा ही प्रगति है, शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति हो रही है। धर्मवीर भारती लोकमानस में इतने गहरे उतर चुके थे जिसका कोई विकल्प उनके तत्कालीन समय के विरोधियों के पास उपलब्ध नहीं हो सकता था।

धर्मवीर भारती की भाषा श्रोता के मन में उनकी अपनी भाषा जैसी लगती थी जो उनके संवेदन के स्तर पर गहराई से जुड़ जाती थी। कवि का मन समय की डगर पर जीवन की छाप निरन्तर अंकित होती रहती है। कवि का मन समय की डगर पर जीवन के प्रवाह से उदासीन तटस्थ नहीं रह सकता। वह विश्व के कण–कण से स्पंदित होता हुआ, क्षण–क्षण में स्वयं को अभिनव चेतना से ओत–प्रोत करता हुआ जीता है। आजादी के बाद की अव्यवस्था, अनाचार,

अनैतिकता, भ्रष्टाचार, छल, पाखण्ड, स्वार्थपरकता कवि को भीतर तक हिला गए तभी तो उसके काव्य में व्यक्ति के स्थान पर युग बोलने लगा कवि स्वाधीन भारत में फैले भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य करता है। मनुष्य का जीवन ज्ञान, क्रिया और भावना पर आधारित है। ज्ञान की अधिकता से मनुष्य विज्ञान और दर्शन की ओर क्रिया की प्रमुखता से धर्म तथा व्यवसाय के पंथों पर तथा भावना की प्रवृत्ति के कारण कला या साहित्य की दिशा में अग्रसर होता है। नैतिकता, सहिष्णुता, सहानुभूति, दया, धर्म जैसी भावनाएं समाप्त हो जाती है और मनुष्य धनोपार्जन की एक मशीन बनकर रह जाता है।

अतः वर्तमान की शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि मूल्यपरक शिक्षा देने का प्रावधान किया जाये, ताकि बालक का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक तथा सांस्कृतिक विकास हो और उसे हर क्षेत्र में दक्ष एवं निपुण बनाए। शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है इसके द्वारा मानव की अतंर्निर्हित योग्यताओं को विकसित करके समाज सम्मत बनाया जाता है। शिक्षा ही मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनाती है। फ्रोबेल ने शिक्षा को एक प्रक्रिया माना है। जिसके कारण बालक की आन्तरिक प्रक्रियाओं को बाहर लाया जा सकता है। अगर किसी भी देश का भविष्य देखना है तो वहां के बच्चों को शिक्षित व सुयोग्य नागरिक बनाया जाये। भारती जी के अनुसार शिक्षा मूल्यपरक व सामाजिक परक होनी चाहिये, ताकि समाज के विकास से देश का विकास हो।

समस्या का औचित्य :

आज की शिक्षा की सबसे ज्वलन्त समस्या यही है कि व्यक्ति शिक्षित हो जाने पर भी व्यावहारिक रूप से पशुत्व का आचरण करता है। आज की शिक्षा मनुष्य का बौद्धिक विकास तो कर सकती है। परन्तु उसके समग्र व्यक्तित्व के विकास में असमर्थ सिद्ध हो रही है।

शोधार्थी ने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर (एम.ए.) होने के कारण व हिन्दी साहित्य में रूचि होने के कारण इस शीर्षक का चयन किया है ताकि नयी पीढ़ी को सुयोग्य शिक्षा और शिक्षा के साथ संस्कार देने के लिए कवि के विचार उपयोगी सिद्ध होंगे। साहित्य जीवन का सार है। आज हमारे सामने अनेक समस्याएं है जैसे –धार्मिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक और सद्भाव की समस्या है। अतः धर्मवीर भारती के विचारों के माध्यम से बालकों का शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक विकास किया जा सकता है। धर्मवीर भारती के इन विचारों से बालकों को देश के लिए सुयोग्य नागरिक बनाया जा सके। जिससे इस समाज को उचित दिशा मिल सके। इसलिए शोधार्थी ने अपने शोध के माध्यम से धर्मवीर भारती के शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक विचारों को समाज के सामने उजागर करना चाहती है जिससे भारत के हर युवा उनके विचारों को अपने जीवन में उतारकर समस्याओं को दूर करने का प्रयास कर सके। यही सोचकर शोधार्थी ने अपने अध्ययन व शोध का उक्त प्रकरण का चयन किया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई है। जो भारत त्याग, तप, प्रेम, सदभाव आदि सद्वृत्तियों का परिचायक था।

वहीं भारत अब दुष्टवृत्तियों से ग्रसित होता जा रहा है। धर्मवीर भारती के शैक्षिक विचारों के माध्यम से उक्त सभी समस्याओं का हल हो सकता है। अतः धर्मवीर भारती के विचार नई पीढ़ी या युवाओं के लिये आवश्यक है और इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिये शोधार्थी ने इस प्रकरण का चयन किया है। धर्मवीर भारती कल्पना शील थे, उनके सीने में कवि का हृदय था, इसलिये उनका मन यथार्थता की उड़ाने भरता है। और वर्तमान व यथार्थ से जुड़ा रहता है। यही कारण है कि धर्मवीर भारती का सम्पूर्ण लेखन समाज की वास्तविकताओं के इर्द–गिर्द ही घूमता रहता है। परन्तु कल्पना ने उसके यथार्थ को सजाया व संवारा है।

धर्मवीर की अधिकांश कविताओं में यथार्थता गुंथी हुई है। इसी भाव का कवि के जीवन या उसकी भावनाओं से अनिवार्य सम्बन्ध होता है। धर्मवीर ने बड़े साहस, धैर्य, और सच्चाई के साथ सीधी सादी भाषा शैली में जीवन्त बिम्बों को सजाकर संवारकर अनूठे गीत दिये है। आज शिक्षा की सबसे ज्वलन्त समस्या है कि व्यक्ति के शिक्षित हो जाने पर भी व्यावहारिक रूप में पशुत्व का आचरण करता है। आज की शिक्षा के द्वारा मनुष्य का बौद्धिक विकास हो रहा है परन्तु उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में असमर्थ सिद्ध हो रही है।

अतः आज धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिकता की विषम खाइयों को पाटने के लिये आमूल चूल परिवर्तन करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। हमने विकास तो किया है पर अपने नैतिक मूल्यों को विस्मृत कर दिया है। धर्मवीर भारती जी के शैक्षिक विचारों के माध्यम से उक्त सभी समस्याओं का हल खोजा जा सकता है। नई पीढ़ी के नवयुवकों को सुयोग्य और वर्तमान शिक्षा के लिये शिक्षा के साथ संस्कार देने के लिये भारती जी के विचार उपयोगी सिद्ध होंगे। इसलिए शोधार्थी शोध के माध्यम से महान लेखक कवि के शैक्षिक व राष्ट्रीय विचारों को वर्तमान समय में समाज के सामने उजागर करना चाहती है। जिससे आज भारत के हर समाज के लोग उनके विचारों को अपने जीवन में उतारकर वर्तमान समस्याओं

को दूर करने का प्रयास कर सकेंगे। इसी कारण शोधार्थी ने भारती जी के शैक्षिक व राष्ट्रीय मूल्यों को चुना है।

समस्या कथन :

''धर्मवीर भारती का शैक्षिक चिन्तन : एक अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :

1. धर्मवीर भारती की वृत्तियों में व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन करना।
2. धर्मवीर भारती के शिक्षा के उद्देश्य व पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
3. धर्मवीर भारती के चारित्रिक व नैतिक आदर्श का अध्ययन करना।
4. धर्मवीर भारती के मनोवैज्ञानिक विचारों का अध्ययन करना।
5. धर्मवीर भारती के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
6. धर्मवीर भारती की कृतियों में व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन करना।
7. धर्मवीर भारती के शिक्षा विषयक चिन्तन का अध्ययन करना।
8. धर्मवीर भारती के मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक विचारों में वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध विधि :

शोध में पाठयपुस्तक विश्लेषण विधि व ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया गया है।

शोध के उद्देश्य के आधार पर निष्कर्ष :

भारती जी की कृतियो में प्राप्त शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन करने के पश्चात इससे प्राप्त निष्कर्ष निकालना आवश्यक है क्योंकि इसके बिना समस्या का विहंगम दृष्टि से न तो आभास ही मिलता है और न ही उसे सुलझाने के लिये भली–भांति मार्गदर्शन ही प्राप्त होता है।

प्रस्तुत शोध ''धर्मवीर भारती का शैक्षिक चिन्तन : एक अध्ययन'' है। इसमें प्रस्तावना, समस्या का औचित्य, समस्या की विधि, समस्या के उद्देश्य व विश्लेषण करने के पश्चात उसकी सीमा निर्धारित की गई है तथा उनके आधार पर भारती जी के शैक्षिक सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय आर्थिक तत्वों का अध्ययन कर उसका मूल्यांकन किया गया तथा उनके द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक तत्वों की वर्तमान में प्रासंगिकता का भी अवलोकन किया गया। भारती जी की कृतियों में अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य का कर्म करने के पश्चात सफलता प्राप्त हो सकती है।

''कर्मणेवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''

अतः कर्म की महत्ता सर्वविख्यात है।

भारती जी के अनुसार शिक्षा से अंधविश्वासों को दूर कर मनुष्य के कार्यों में सुधार किया जा सकता है। अतः शिक्षा लोगों में जागरूकता लाती है तथा शिक्षित समाज देश की उन्नति में भी सहायक होता है। संस्कृति की पहचान शिक्षा का आवश्यक तत्व है। अतः यह किसी भी देश की उन्नति में बाधक नहीं साधक है। क्योंकि इस संस्कृति के द्वारा ही एक देश दूसरे देश के साथ तादाम्य स्थापित कर सकता है। हमें धार्मिक आडम्बरों में न पडकर वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए। अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को दूर करना चाहिए।

भारती जी ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना पर जोर देते है जो कि आज की एकाकी प्रवृत्ति के कारण समाप्त होती जा रही है, अतः हमें सामाजिक विषमता को दूर कर एकता की स्थापना करनी चाहिए। तथा यह शिक्षा द्वारा ही संभव है क्योंकि शिक्षा जाति–पांति के भेदभाव को दूर कर एक साथ रहना सिखाती है। शिक्षा के द्वारा आपसी द्वेष को समाप्त कर कल्याण की भावना का विकास किया जा सकता है।

अतः भारती जी के अनुसार शिक्षा कल्याणकारी व समाज सेविका है। भारती जी की कृतियों में छात्र के द्वारा शिक्षक के प्रति सम्मान, गुरु–शिष्य संबंध, छात्रों के आपसी संबंध को स्थान दिया गया अतः इनसे शिक्षा ग्रहण करते हुए नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना की जा सकती है। भारती जी हिन्दी की अनिवार्यता पर विशेष बल देते हैं फिर भी उन्होंने अंग्रेजी की उपेक्षा नहीं की है। इसके साथ ही भारतीय धर्म और समाज के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाली, प्राकृत व संस्कृत का ज्ञान भी आवश्यक है। भारती जी के काव्यों में जहां एक और मानवतावादी मूल्यों की उपयोगिता बताई है वही दूसरी और राष्ट्रीय भावना को महत्व दिया गया है। इस प्रकार भारती जी के काव्य में शोधपरक सूक्ष्म दृष्टि की घुलनशीलता है।

भारती जी राजनैतिक संकट और मानसिक उद्वेलन तथा वेदना को दूर करने के लिये स्वराज की स्थापना पर जोर देते हैं। तथा नियम कानून और व्यवस्था के तर्क के विपरीत संकल्प व उल्लास और राष्ट्रीयता को महत्व देते है वे प्रजातंत्र की स्थापना पर बल देते हैं। समाज को दो वर्गों में बांटा गया है– उच्च वर्ग व निम्न वर्ग उन्होंने अपनी कृतियों में दोनों वर्गों को सम्मिलित किया है। पूंजीपति वर्ग के द्वारा सर्वहारा वर्ग का शोषण उस समय में प्रचलित था। भारती जी उसमें सुधार करना चाहते थे।

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

भारती जी समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा अत्याचारों को दूर करना चाहते थे। उनके अनुसार सामाजिक विषमता चारों और फैली हुई है। तथा उसका विषम प्रभाव लोगों को दूषित कर रहा है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। भारती जी सामाजिक कल्याण के लिये वर्गहीन समाज चाहते थे जिससे सभी को समान अधिकार मिले तथा सभी मिलजुल कर रहे। इसके लिये वे जाति प्रथा को दूर करना चाहते थे इसके साथ छुआछूत व वर्णभेद में सुधार करना चाहते थे। भारती जी सामाजिक विकृति का मूल कारण आर्थिक असमानता को मानते थे।

वे इस मूल कारण का निराकरण कर आर्थिक विषमता की खाई को पाटकर समत्व विधायक समाज की स्थापना पर बल देते हैं। भारती जी ने नारी के व्यक्तित्व का गठन उच्चतम आदर्श की पृष्ठभूमि पर किया है तथा नारी में पति–परायण, सहिष्णुता, संतोष, त्याग, उदारता, धैर्य, करूणा, क्षमा तथा लोक कल्याण आदि गुण बताये हैं। अतः वे नारी को पुरुष की सफलता का कारण मानते हैं। वे नारी को ब्रह्म की दृष्टि से देखते है इस प्रकार उन्होंने नारी को अनेक गुणों से युक्त बताकर उच्चासन पर स्थापित किया है। भारती जी ने समाज को बहुत निकट की गहराई से देखा व परखा था। अतः उन्होंने अपने काव्य में मानवीय विवशता, नारी के प्रति दृष्टिकोण हृदय परिवर्तन की पुकार स्वाभिमान आदि का वर्णन किया है। उनके काव्य में उच्चवर्ग के प्रति एक विशेष प्रकार का आक्रोशमूलक उदघाटन है।

शोध समस्या का शैक्षिक निहितार्थ :

1. प्रस्तुत शोध के अध्ययन से प्रजातंत्रीय शासन को बल मिलेगा तथा उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के शोषण के प्रति रूकावट पैदा होगी।
2. शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढ़ावा मिलेगा तथा आपसी विद्वेष की भावना कम होगी।
3. प्रस्तुत शोध के अध्ययन से नारी को भोग की वस्तु न मानकर समाज में इसकी श्रेष्ठता प्रतिपादित की जायेगी। जिससे कि उसकी स्थिति में सुधार होगा और उसे सम्मान प्राप्त होगा।
4. प्रस्तुत शोध से व्यावहारिक ज्ञान को बढावा मिलेगा।
5. प्रस्तुत शोध से मनोवैज्ञानिक विचारों का विकास होगा।
6. शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढावा मिलेगा तथा आपसी विद्वेष की भावना कम होगी।
7. प्रस्तुत शोध के अध्ययन करने से प्राचीन शिक्षा पद्धति शिक्षण विधि को बढ़ावा मिलेगा।
8. शोधार्थी द्वारा शोध का अध्ययन कर शिक्षा के प्रति जागरूकता बढेगी तथा पाठ्यक्रम में सुधार होगा बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा।
9. प्रस्तुत शोध से मनोवैज्ञानिक विचार पढकर समायोजन की भावना में विकास होगा।
10. शोध से शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तथा पाठ्यक्रम में सुधार होगा।
11. क्षतिपूर्ति का सिद्धान्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विस्तार प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

भावी शोध हेतु सुझाव :

1. भारती जी की कृतियों में शैक्षिक प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. भारती व अज्ञेय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. भारती व रघुवीर सहाय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. आधुनिक साहित्यकारों के मनोवैज्ञानिक विचारों की वर्तमान में उपादेयता का अध्ययन किया जा सकता है।
5. भावी शोधार्थी द्वारा पाश्चात्य एवं भारतीय दृष्टिकोण से शैक्षिक विचारों का अध्ययन पर शोध कार्य किया जा सकता है।
6. भारती जी कृतियों में जीवन मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
7. भारती जी कृतियों में राष्ट्रीयता का अध्ययन किया जा सकता है।

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी देवीशंकर साहित्य विधाओं की प्रकृति, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लि. अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
2. भारती, धर्मवीर ''सातगीत वर्ष'', इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोदी रोड, नई दिल्ली
3. भारती धर्मवीर, ''मानव मूल्य और साहित्य'', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
4. भारती पुष्पा धर्मवीर भारती की साहित्य साधना'' इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोदी रोड़, नई दिल्ली
5. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 2, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 3, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 4, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 5, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 6, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 7, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
12. बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 8, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
    बाडिवडेकर चन्द्रकांत धर्मवीर ग्रन्थावली 9, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13. भाई योगेन्द्रजी शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
14. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद साहित्य और समाज, दिनकर स्मृति न्यास, दिल्ली
15. चतुर्वेदी, रामप्रसाद हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास'' लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. द्विवेदी हजारी प्रसाद भाषा साहित्य और देश, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
17. गुप्त, गणपतिचन्द्र ''हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'' लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
18. गंगा डॉ. रणवीर भारतीय साहित्यकारों से साक्षात्कार, चोड़ा रास्ता, जयपुर
19. कुमार, कृष्ण, भारतीय संस्कृति के आधार तत्व प्रकाशन बुक डिपो, बरेली
20. मिश्र, विधानिवास ''हिन्दी साहित्य का पुनरावलोकन'', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
21. मिश्र, रामप्रसाद ''हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास'' सत्साहित्य भण्डार अशोक विहार, दिल्ली
22. मिश्र, ब्रह्मदेव, स्वातत्रयोत्तर हिन्दी समीक्षा सिद्धान्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
23. नगेन्द्र, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' मयूर पेपर वैन्स नोएडा
24. पालीवान, कृष्णदत्त हिन्दी आलोचना का सैद्धान्तिक आधार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
25. पाण्डेय, रामशक्ल ''शिक्षा के मूल सिद्धान्त'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
26. रमन, जे.एफ. इन्टरजक्सन टू रिसर्च, मेगाहित कम्पनी न्यूयार्क पी.एफ.
27. श्री नारायण चतुर्वेदी''आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल'' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
28. शर्मा, राम विलास ''नई कविता और अस्तित्ववाद राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, इलाहाबाद
29. शर्मा, वेकंट ''हिन्दी काव्यशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त और उसकी विकास परम्परा'' राज. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
30. सिंघल, शशिभूषण ''साहित्य विधाएं आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली

पत्र–पत्रिकाएं :

1. चौहान सुजाता मूल्यपरक शिक्षा : एक मनोवैज्ञानिक पहलू, पुणे विश्वविद्यालय
2. तिवारी, मृदुला शिक्षक शैक्षिक मूल्य, शिविर पत्रिका, बीकारेन, जुलाई, 2007
3. साहित्य अमृत साहित्य एवं संस्कृति की संवाहक, अप्रैल 2013, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुन्दर द्वारा आसफअली रोड, नई दिल्ली

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN